मिट्टी की लड़की

प्राचीन चीन की कहानी

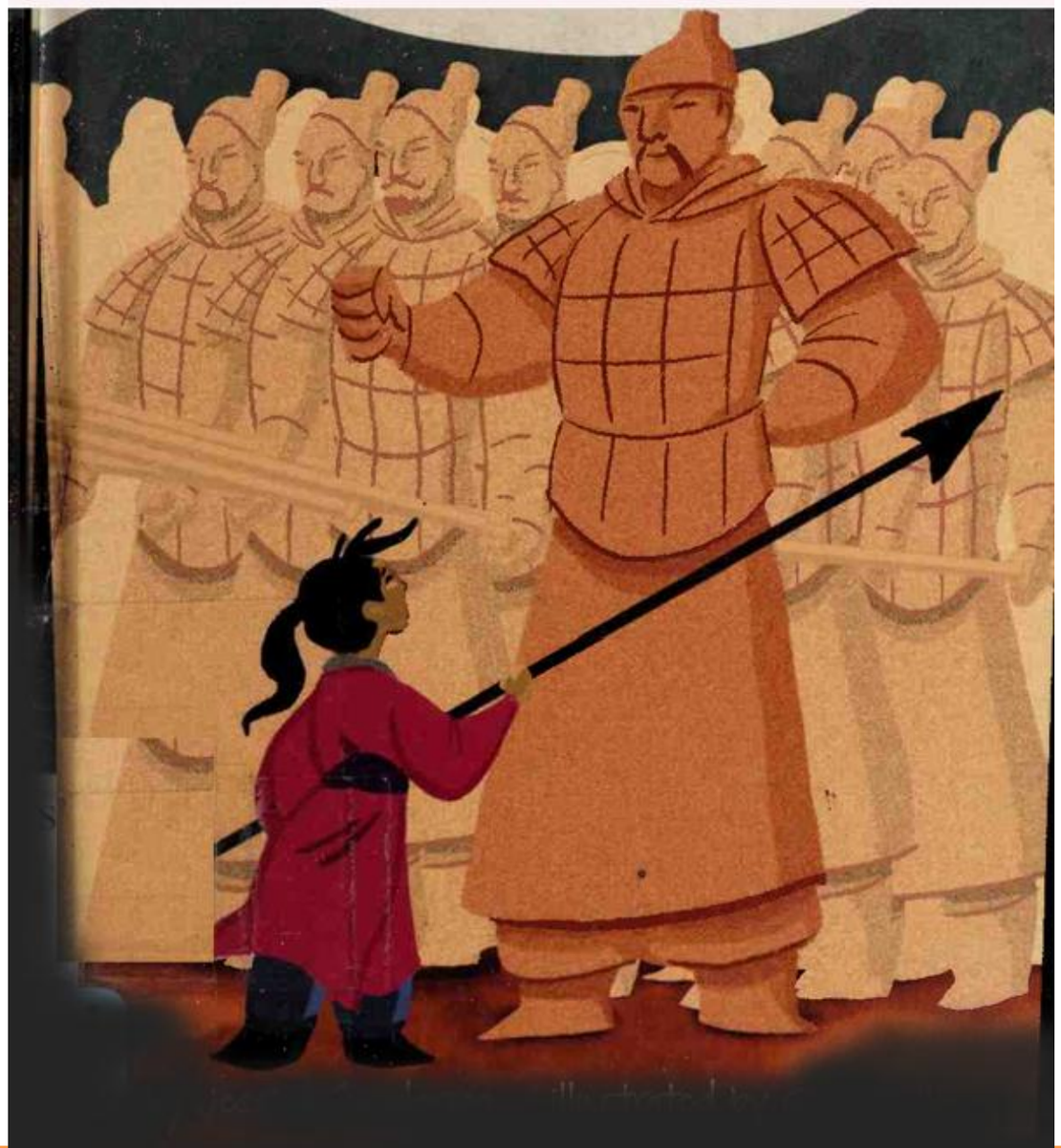

मिट्टी की लड़की

प्राचीन चीन की कहानी

विषय-वस्तु

जानने के लिए कुछ शब्द

अध्याय एक

अध्याय दो

अध्याय तीन

चौथा अध्याय

अध्याय पाँच

अध्याय छह

अंत के शब्द

जानने के लिए शब्द

कन्फ्यूशियस - एक चीनी दार्शनिक, जिनकी सीख आज भी दुनिया भर के कई एशियाई नागरिकों और अन्य लोगों को प्रभावित करती हैं.

चीन की महान दीवार - 4,000 मील (6,400 किलोमीटर) की दीवार जो पूरे उत्तरी-चीन में फैली हुई है.

पारा - एक जहरीली धातु जो साधारण तापमान पर तरल होती है; प्राचीन चीनवासियों का मानना था कि पारा उन्हें लंबे समय तक जीने में मदद करेगा.

किन राजवंश (221 ई.पू.-. ई. बाद 206) - इस काल के दौरान चीन के पहले सम्राट किन शि हुआंगडी का शासन था; 221 ई.पू. में, चीन एक राज्य हुआ और एक देश बना.

टेराकोटा- एक भूरी नारंगी मिट्टी.

कब्र - मृतकों के लिए एक घर या कक्ष.

परिचय

210 ई.पू. .-किन राजवंश

बुद्धिमान विद्वान कन्फ्यूशियस ने कहा: “बहादुर कभी डरते नहीं हैं."

मैं आपको एक कहानी बताऊंगी, जो आपने कभी नहीं सुनी होगी. यह कहानी बहादुरी के बारे में है. यह कहानी डर के बारे में है. यह कहानी है कि मैं सम्राट की योद्धा कैसे बनी.

जब आपके पास डरने का कोई कारण नहीं तब आप खुद को बहादुर मान सकते हैं. जब मैं छोटी थी तो मुझे लगाता था कि मैं बहादुर हूँ. मुझे कभी डर नहीं लगता था. मुझे लगा कि मैं कभी किसी चीज से नहीं डरूंगी. मेरे दिमाग में पहले से ही एक योद्धा बनने का विचार था.

एक योद्धा होने के लिए, आपको अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त करनी होती है. एक सच्चा योद्धा, जिसे लोग सदियों तक याद रखें, वो होता है जो मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सके. मैं वैसी ही एक योद्धा बनी.

लोगों के अनुसार कई योद्धाओं ने अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त की है, वे योद्धा बहादुर हैं. मेरी कहानी उनसे कुछ अलग है?

क्यों? क्योंकि मैं एक लड़की हूं.

अध्याय एक

मैं चीन के पहले सम्राट किन शि हुआंगडी, के अंधेरे काल के दौरान चीन में रही.

बहुत से लोग आपसे कहेंगे कि प्रथम सम्राट एक अच्छा सम्राट था. और शायद वो वैसा था भी. उसने कई छोटे देशों को जोड़कर एक बड़े देश का निर्माण किया. उसने उस देश का नाम चीन रखा. उसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा.

जो लोग मानते हैं कि वो एक दुष्ट सम्राट था, वह इस बात को कभी खुलकर नहीं कहेंगे. अब जब सम्राट मर चुका है, फिर भी उसके खिलाफ बोलने की किसी की हिम्मत नहीं होती है.

लेकिन मैं आप लोगों की बताऊंगी कि वो कठोर और क्रूर भी था. उसने मासूमों को सजा दी. उसने अपनी सड़कों और चीन की महान दीवार के निर्माण के लिए लोगों से गुलामों की तरह काम करवाया.

सम्राट नहीं चाहता था कि कोई उसे बताए कि उसे क्या करना चाहिए - विशेष रूप से एक छोटी लड़की.

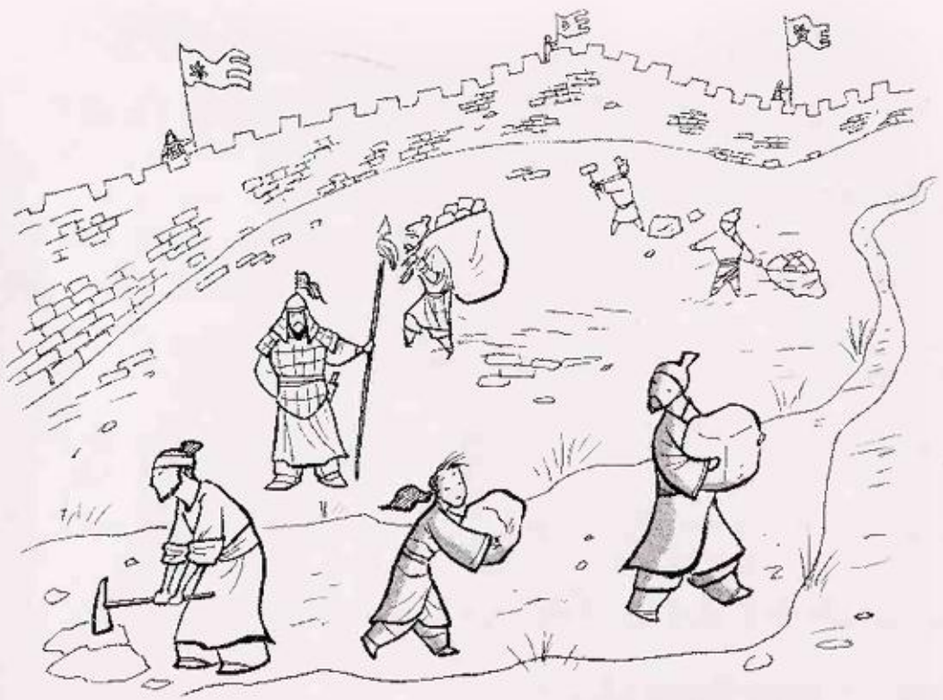

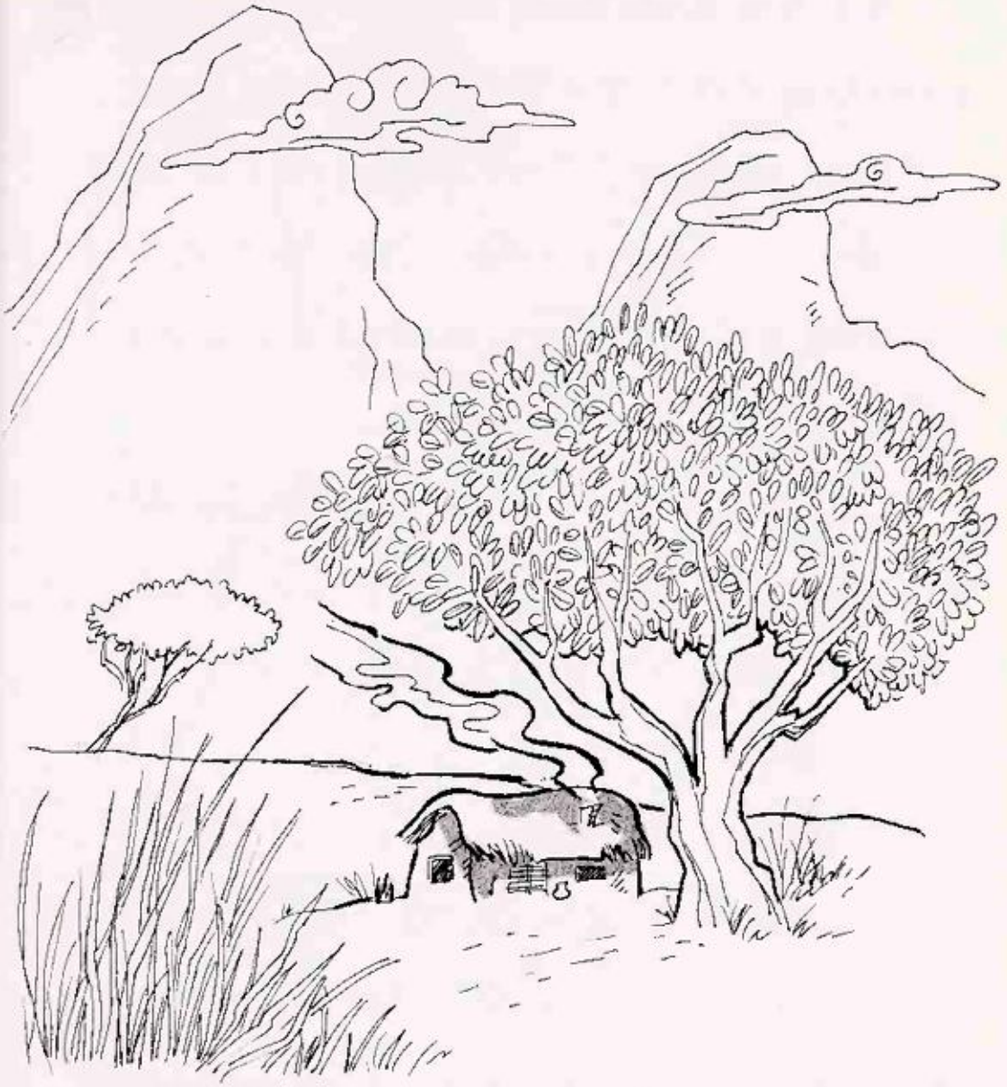

उसके बारे में मैं बाद में आऊंगी. अभी के लिए, मैं आपको बताऊंगी कि मैं और मेरे पिता गांव की एक झोपड़ी में रहते थे. मेरे पिता ने चीन की महान दीवार को बनाने के लिए धूप, हवा और बारिश में मेहनत की.

"एक अच्छे देश के निर्माण में सैकड़ों पुरुषों का श्रम और समय लगता है," मेरे पिता कहते थे.

"और महिलाओं का भी," मैंने उसमें जोड़ा. मैं पिता के लिए खाना पकाती थी, उनके कपड़े सिलती थी, उनके जूते सिलती थी, और फर्श साफ़ करती थी.

मेरे पिता केवल हँसे.

मुझे लगा कि मैं एक दयनीय जीवन जी रही हूं. पूरे दिन मैं गेहूं के खेतों में काम करती थी. और जब मैं घर आती, तो मैं अपने पिता की देखभाल करती थी.

जब मैं सम्राट के सैनिकों को गुजरते देखती तो मुझे ईर्ष्या होती थी. मैं उन लड़कों की तरह ही बहादुर थी. मैं भी उनके जैसे ही एक योद्धा बनना चाहती थी. मैं अपने जीवन को बदलने के लिए तरसती रही, हालांकि तकदीर को कुछ और ही मंज़ूर था.

चिलचिलाती सर्दी की एक सुबह, मेरे पिता के पास एक दूत आया. "रण जी-शू ने आपके लिए सन्देश भेजा है. आप जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी ही चांगआन पहुंचें," दूत ने कहा.

मेरे पिता ने अपने दिल पर हाथ रखा. "रण जी-शू! " उन्होंने कहा. "वो मेरा पुराना दोस्त है. मैंने सुना है वह सम्राट की सेना का निर्माण कर रहा है. मेरे लिए यह कितना बड़ा सुख है! कितना बड़ा आनंद है! वो चाहता है कि मैं एक योद्धा बनूँ."

मैंने अपने पिता को शक की निगाह से देखा. वो एक बूढ़े आदमी थे. वो भला योद्धा कैसे बन सकते थे?

उस रात पिता ने अपनी यात्रा की तैयारी की. उन्होंने अपना सामान पैक किया. काश, मैं भी उनके साथ जा पाती.

"बस वहाँ खड़ी मत रहो, युंग-लू," उन्होंने डांटा. "मेरा पारा लाओ."

हर रात, मेरे पिता कुछ पारा लेते थे. उस समय कई लोगों का यह मानना था कि पारा उन्हें हमेशा के लिए अमर बना देगा.

"सम्राट भी पारे की गोलियां लेते हैं," पिताजी अक्सर गर्व से कहते थे.

उस रात, पिताजी दो गोलियां लेना चाहते थे.

"नहीं, पिताजी," मैंने कहा. "दो आपके लिए बहुत ज्यादा होंगी?"

पर उन्होंने दो गोलियां ही खाईं.

हालाँकि मेरे पिता का मानना था कि पारा उन्हें मजबूत बनाएगा, लेकिन उस रात वो बहुत बीमार पड़े और उनकी मृत्यु हो गई. मैं बहुत उदासी हुई. जीवन में पहली बार मुझे डर लगा. मैं अब क्या करूं? मैं कहाँ जाऊँ? मैं सोचने लगी.

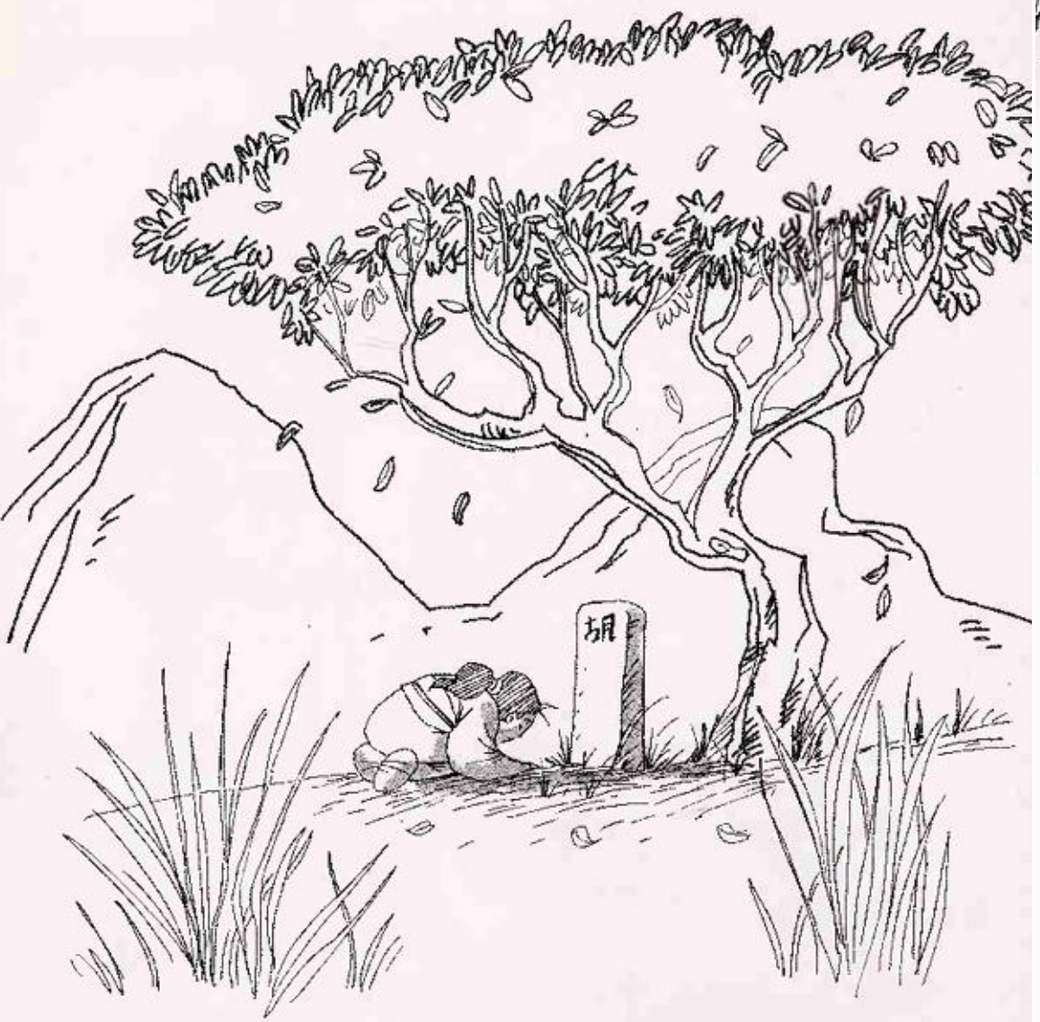

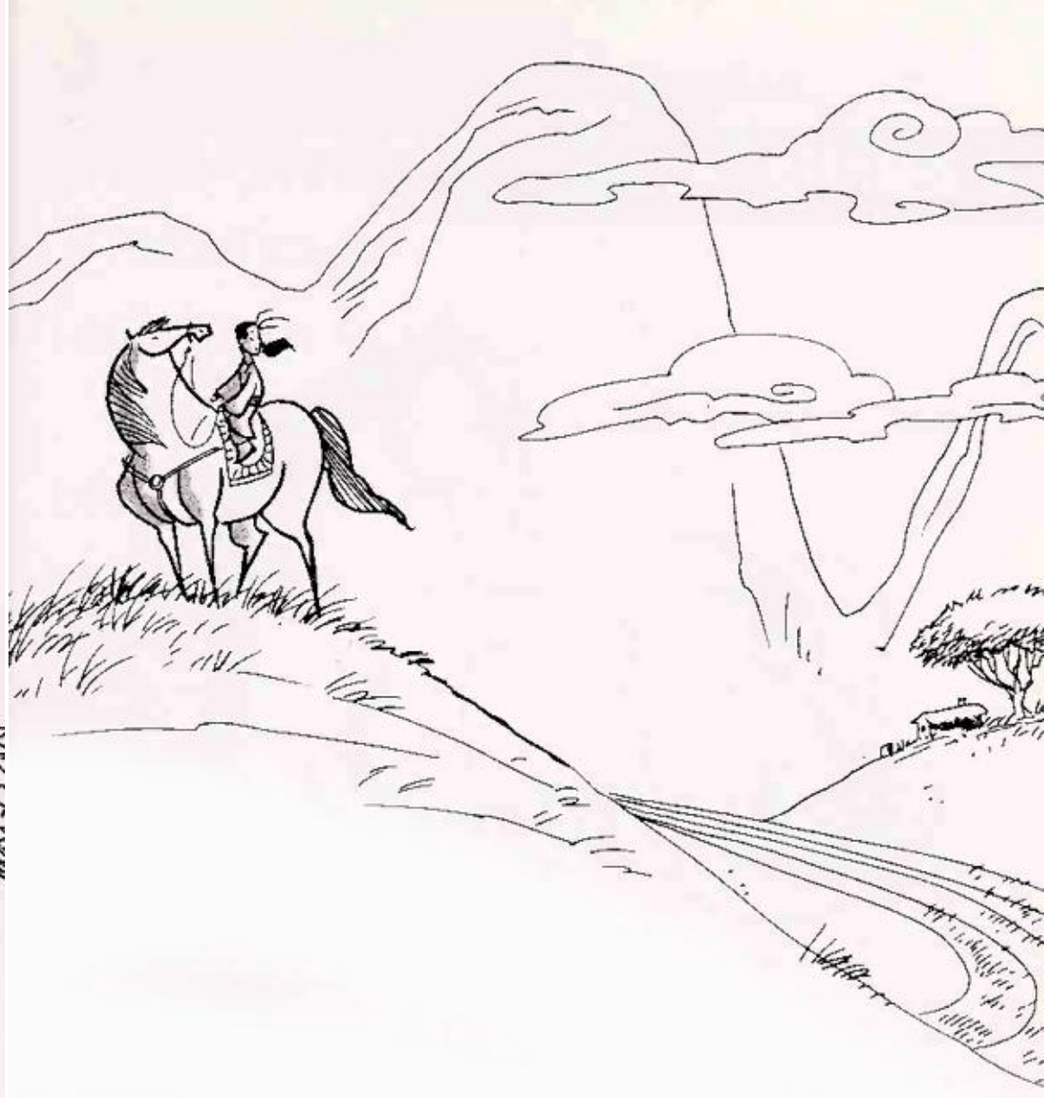

मैं पिताजी को भेजे दूत के जरूरी संदेश के शब्दों को याद करती रही. मेरे पिता ने कहा था, "रण जी-शू एक सेना का निर्माण कर रहा है."

फिर गेहूं के खेतों और अपनी झोपड़ी से अलविदा कहकर मैंने चांगआन के लिए प्रस्थान किया.

अध्याय दो

चांगआन की यात्रा बहुत लंबी थी. मैं अपने साथ जो चावल लाई थी, वो मैंने खाया. जब चावल ख़त्म हो गया तब मैंने खरगोश और चूहे पकड़े और उन्हें आग पर भूनकर खाया.

पास से गुज़रते कई लोगों ने मुझे बुलाया और पूछा, "छोटी लड़की, तुम यहाँ अकेले पर क्या कर रही हो?"

"मेरे पिता मर चुके हैं," मैंने उन्हें जवाब दिया. "अब मैं एक योद्धा बनने जा रही हूं."

"अरे! तुम एक लड़की हो," उन्होंने कहा. "तुम भला योद्धा कैसे बन सकती हो."

लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी. मैंने अपना सिर ऊँचा उठाया और साहस के साथ आगे मार्च किया, हालाँकि अंदर से मुझे गहरा डर भी था.

जब मैं चांगआन शहर पहुंची, तो मैंने सभी से पूछा कि मुझे रण जी-शू कहां मिल सकता है. पर कोई भी उसके बारे में नहीं जानता था.

"वो सम्राट किन के लिए सेना का निर्माण कर रहा है," मैंने उनसे कहा. "आप उसे ज़रूर जानते होंगे!" लेकिन लोगों ने "न" में अपना सिर हिलाया.

अंत में, एक व्यक्ति ने मुझे वो उत्तर दिया जिसकी मुझे प्रतीक्षा थी. उसने अपनी धीमी आवाज में कहा, "तुम्हें लिशान पर्वत के पास सेना मिलेगी. लेकिन सावधान रहना. किसी को यह पता नहीं है कि वहां सेना है. हाँ, इसके बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहना."

मैंने लिशान पर्वत की ओर कूच किया. मैं भूख और सफर से थक गई थी. मैंने सड़क पर बच्चों को खेलते हुए देखा. काश मैं भी उनके साथ खेल पाती.

लेकिन अगर मैं एक योद्धा बनना चाहती थी, तो मैं इतनी जल्दी हार नहीं मान सकती थी.

एक पेड़ के पास आराम कर रहा मुझे एक वृद्ध व्यक्ति दिखा. "मैं रण जी-शू से कहां मिल सकती हूँ?" मैंने उस आदमी से पूछा.

"रन जी-शू?" उसने दोहराया. "क्यों, वो मैं ही हूँ!"

मैं उसे घूरती रही. वो काफी बूढ़ा था. ऐसा लगा जैसे बिना ठोकर खाए वो आगे चल नहीं सकता था. भला यह आदमी एक सेना का लीडर कैसे हो सकता था?

"मुझसे कुछ गलती हुई," मैंने कहा.

मैंने घोड़े को वापस सड़क की ओर मोड़ा, लेकिन उस आदमी ने मुझे पुकारा. "तन रुई?" उसने पूछा.

मैंने रुककर पीछे देखा. तन रुई मेरे पिता का नाम था.

"मैं तन रुई नहीं हूँ" मैंने कहा.

"मैंने तन रुई को बुलाया था, और यहाँ एक छोटा बच्चा आया है," रण जी-शू ने कहा.

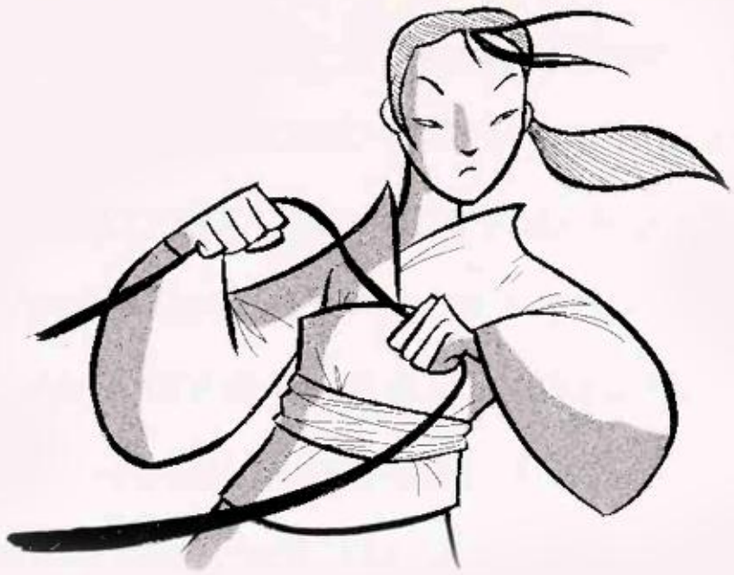

मैंने उसे गुस्से से देखा. क्या वह नहीं देख सकता था कि मैं एक बच्चा नहीं था? मैं एक लड़की थी, एक बहादुर लड़की!

जैसे ही मैंने अपने घोड़े से उतरी, मैंने कहा, "तन रुई मेरे पिता थे. मैं युंग-लू हूं. मैं यहां उनकी जगह एक योद्धा बनने आई हूं."

रण जी-शू ने हंसते हुए कहा, "उससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारे पिता कौन थे, पर तुम अभी भी एक लड़की ही हो."

मैं वहां से मुड़ी. मैं हार नहीं मानना चाहती थी. लेकिन वो सही था. लड़कियों को योद्धा नहीं बनने दिया जाता था.

जैसे ही मैं सड़क पर कुछ आगे बढ़ी, मुझे दूरी पर एक भव्य दृश्य दिखाई दिया. सैनिकों का एक बड़ा समूह मेरी ओर मार्च कर रहा था, उन्होंने अपने कंधों पर एक सिंहासन उठाया था. सिंहासन पर एक आदमी गहनों और रेशम से ढका हुआ बैठा था. वो सम्राट किन था!

मैं जल्दी से एक पेड़ के पीछे छिप गई और शाही समूह के गुजरते हुए घूरने लगी.

सम्राट अपने गार्ड पर चिल्लाया, "गार्ड! और चाय लाओ! मुझे पंखा झलो!"

सम्राट फिर चिल्लाया, "गार्ड! मेरी पारे की गोलियाँ लाओ!"

पारा! मैंने सोचा. उसने ही मेरे पिता को मार डाला था.

मैंने पेड़ के पीछे से छलांग लगाई और मैं सम्राट किन की ओर बढ़ी. "नहीं नहीं!" मैं चिल्लाई. "पारा आपको मार डालेगा!"

क्या सम्राट मेरी बात सुनेंगे? आप आश्चर्य कर सकते हैं. आप इस बात पर भी आश्चर्य कर सकते हैं कि मैंने ऐसे कठोर, स्वार्थी सम्राट को बचाने की कोशिश क्यों की.

देखिए मेरे पिता ने अपना जीवन सम्राट के लिए महान दीवार बनाने में बिताया था. मैं उस सम्राट को मरने नहीं दे सकती थी.

सम्राट किन ने अपने सैनिकों को रोका. सम्राट मुझे देखकर घबराया. उसकी आँखें गुस्से से उबल पड़ीं.

"तुमने क्या कहा?" वो चिल्लाया.

"पारे ने मेरे पिता को मार डाला. और वो आपको भी मार देगा," मैंने कहा.

"कोई भी इंसान सम्राट किन को आदेश नहीं देता है. मेरी आँखों के सामने से दफा हो जाओ!" वो चिल्लाया.

शायद वो मेरी बात सुनेगा, मुझे लगा और मैं फिर से पेड़ के पीछे छिप गई. शायद अब वो और पारे की गोलियां नहीं लेगा.

लेकिन मुझे उस पर शक था.

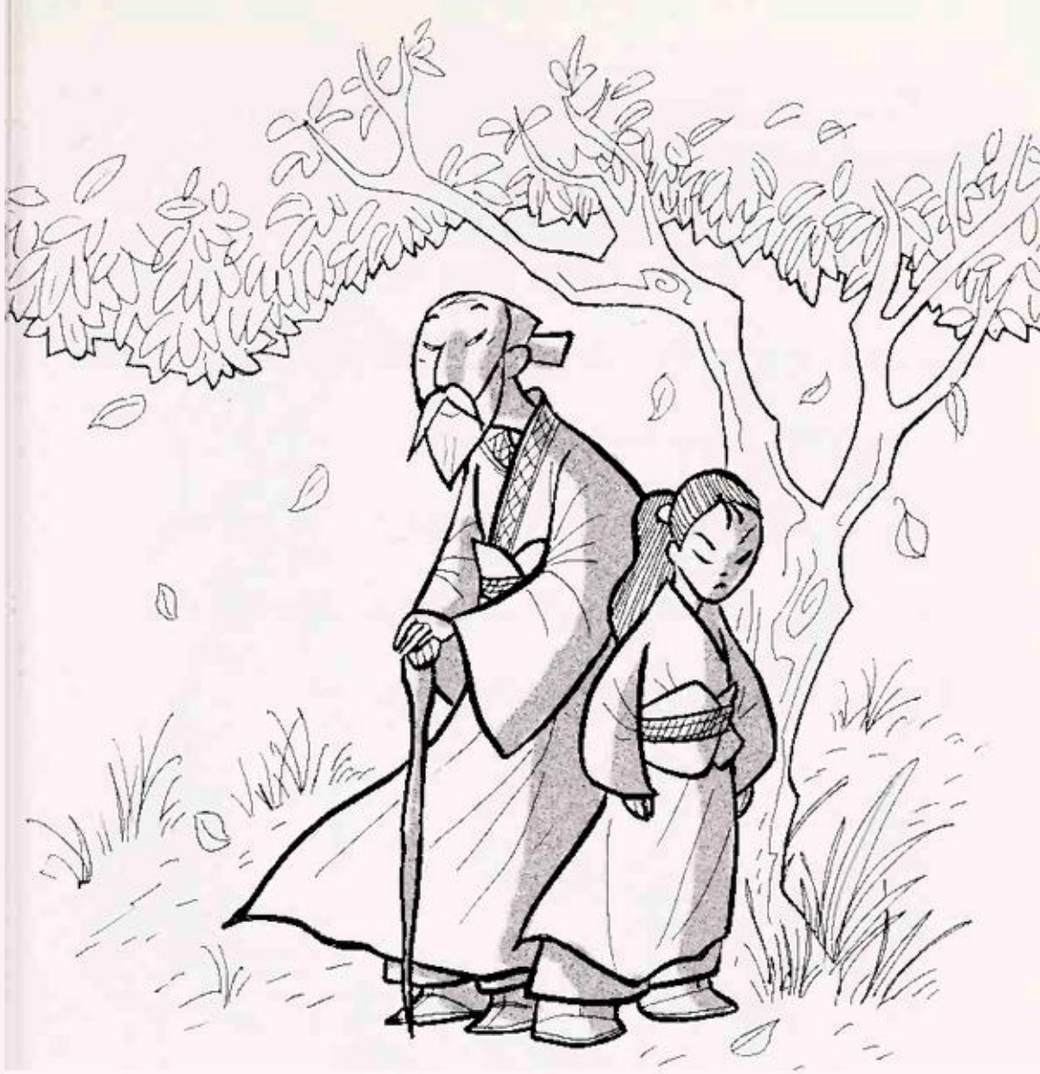

"तुम भाग्यशाली हो," मेरे पीछे से एक आवाज ने कहा. "गनीमत है उसने तुम्हें जेल में नहीं डाला."

यह रण जी-शू था.

मैंने अपना सिर हिलाया. "मैं भाग्यशाली नहीं हूँ. मेरा कोई घर नहीं है, और मैं कभी भी योद्धा नहीं बनू सकूंगी."

रण जी-शू ने सिर हिलाया. "सम्राट अपनी सेना में एक लड़की की भर्ती पर बहुत गुस्सा होगा," उसने कहा. "लेकिन सम्राट एक दयालु आदमी नहीं है. उसके पास इतनी सारी चीज़ें और सत्ता नहीं होनी चाहिए!"

रण जी-शू ने मेरी बाँह पकड़ी. "मेरे साथ चलो," उसने कहा. "मैं तुम्हें कुछ महत्वपूर्ण चीज़ दिखाऊंगा."

अध्याय तीन

मैं रण जी-शू के पास रहने के लिए दौड़ी क्योंकि वो घने पेड़ों के बीच से गुजर रहा था. एक बूढ़े व्यक्ति के लिए, वो बहुत तेज था.

वह एक बड़ी चट्टान के सामने जाकर रुका. उसने सुना. फिर उसने चट्टान को एक तरफ धकेला और गुफा में प्रवेश करने के लिए मुझे बुलाया.

गुफा के अंदर कई मोड़ और घुमावदार रास्ते थे. मुझे चक्कर आने लगा और डर लगने लगा. वो जगह बहुत अंधेरी थी.

हम अंधेरे में चलते गए. अंत में, मैंने गुफा की दीवारों के पास मोमबत्तियों को जलते देखा. फिर मैंने राहत की सांस ली. जैसे ही हम एक रोशनी वाले कमरे में दाखिल हुए मैं रुक गई. मेरी राहत, भय में बदल गई.

मैंने वहां सैकड़ों सैनिकों को आमने-सामने खड़े हुए देखा! उनके हथियार उनके हाथों में थे. मैं चीख उठी.

रण जी-शू हँसा.

मेरी चीख दीवारों से टकराई और मेरे पास वापस आई. लेकिन सैनिक वहां से नहीं हटे.

वे मिट्टी की मूर्तियां थीं - सैकड़ों की संख्या में. प्रत्येक मूर्ती के पास एक असली हथियार था.

"यह सम्राट का गुप्त मकबरा है," रण जी-शू ने कहा. "ये वे योद्धा हैं जो अगली दुनिया में सम्राट की रक्षा करेंगे."

वो कोई साधारण मकबरा नहीं था. वो एक भूमिगत महल था. उसकी छत महंगे नगों और सितारों से जड़ी थी. कब्र के सामने एक हाथीदांत का बना सिंहासन खड़ा था. लेकिन मिट्टी सैनिकों की सेना से ज्यादा आश्चर्यजनक कुछ भी नहीं था. मैं योद्धाओं की कतारों के बीच में से होकर चली. हरेक का चेहरा अलग था. वे इतने वास्तविक लग रहे थे कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे जीवित तो नहीं हैं मैंने उन्हें नोचकर देखा.

"मैंने इनमें से कई योद्धाओं को गढ़ा है," रण जी-शू ने कहा. "तुमने आज बड़ी बहादुरी दिखाई. क्या तुम योद्धा बनना चाहोगी?"

जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, मैं मिट्टी की योद्धा नहीं बनना चाहती थी. मैं असली योद्धा बनकर असली युद्ध में लड़ना चाहती थी. लेकिन जब मैंने मिट्टी की सेना के आसपास देखा, तो मुझे उनमें से एक होने का आग्रह महसूस हुआ. मैं सम्राट किन की हमेशा के लिए रखवाली करना चाहती थी.

"हाँ," मैंने जवाब दिया. "मैं आपके योद्धाओं में से एक बनूंगी."

चौथा अध्याय

अगले कुछ दिनों में, मैं तब बहुत शांत खड़ी रही जब रण जी-शू ने मेरे चेहरे का अध्ययन किया. फिर उसने मेरे चेहरे, हाथ और शरीर पर मिट्टी से निशान बनाए. मैं यह देखकर आश्चर्यचकित थी कि मूर्ती मुझ से कितनी मिल रही थी.

लेकिन मुझे चिंता भी थी. वो मूर्ती एक महिला सैनिक की थी. जब सम्राट को पता चलेगा कि उसकी सेना में एक लड़की थी, तो फिर वो क्या करेगा?

एक दिन, एक तेज आवाज गुफा में से गूंज उठी. "सम्राट," रण जी-शू ने कहा. "जल्दी से छिप जाओ!"

मैंने अपना थूक निगला. यदि सम्राट किन ने मुझे या मेरी मिट्टी की मूर्ती देखी तो, रण जी-शू और मेरी मौत निश्चित थी. मैं एक मूर्ती के पीछे झुक गई. उस मूर्ती की बड़ी चांदी की ढाल ने मुझे सम्राट की निगाह से बचाए रखा.

"मकबरे को तैयार होने में कई और साल लगेंगे," सम्राट किन ने अपने गार्ड से कहा. "यहाँ और गहने, अधिक हाथी दांत, अधिक सैनिक चाहिए होंगे!"

उनकी तेज़ आवाज पूरे मकबरे में गूंज उठी.

"लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा," सम्राट किन ने कहना जारी रखा. "वैसे मुझे इस मकबरे की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. मैं हमेशा के लिए जीवित रहूंगा. गार्ड, जल्दी मेरी पारे की गोलियां लाओ."

रण जी-शू ने मुझे देखा जैसे कि वो जानता था कि मैं उस समय क्या करूंगी.

मैं सम्राट को मरने नहीं दे सकती थी - मेरे पिता ने उनकी अपार सेवा जो की थी.

जब गार्ड, सम्राट किन की गोलियां लाया, तो मैं मूर्ति के पीछे से निकली. मैं सम्राट के पीछे उनके साये में छिप गई. जैसे ही उन्होंने गोलियाँ अपने मुँह में डालने की कोशिश की मैंने उनकी बाँह खींची. गोलियां जमीन पर गिर गईं.

मुझे लगा कि मैं पहरेदारों से आगे निकल जाऊंगी. पर वो मुझ से नहीं हुआ. उन्होंने मुझे पकड़ लिया और वे मुझे वापस सम्राट के पास ले गए.

मेरा अंत समीप था.

"तुम फिर से!" सम्राट किन चिल्लाए. "मैंने तुम्हे चेतावनी दी थी."

"और मैंने भी आपको चेतावनी दी!" मैंने कहा. "लेकिन आपने मेरी बात नहीं सुनी."

"चुप!" वो चिल्लाए. "गार्ड, लड़की को दूर ले जाओ. उसे मार डालो!"

जैसे ही गार्ड ने मेरी बाहों को पकड़ा, रण जी-शू आगे आया. उसने झुककर अभिवादन किया.

"सम्राट किन," उसने कहा, "कृपया इस लड़की को छोड़ दें. वो मेरी सहायक है. वो केवल आपकी सेवा करने के लिए यहां है."

बादशाह ने रण जी-शू को घूर कर देखा. एक लंबा क्षण बीता, और फिर उन्होंने कहा, "तुम मेरे सबसे अच्छे मूर्तिकार हो. मैं उसे एक और मौका दूंगा. लेकिन तुम दोनों को उसकी कीमत चुकानी होगी. तुम दोनों अपने जीवन के अंत तक मेरी सेवा करोगे. तुम दोनों अब इस मकबरे को कभी नहीं छोड़ सकोगे!"

पहरेदारों ने मेरे हाथ छोड़ दिए. मैं दौड़ी-दौड़ी रण जी-शू के पास गई.

सम्राट किन ने गार्डों की ओर रुख किया और उन्हें आदेश दिया. "प्रवेश द्वार सील करो ताकि ये मूर्ख यहाँ से कभी बचकर कभी भाग नहीं सकें."

फिर सम्राट मुड़ा और चला गया. पहरेदारों ने उसका पीछा किया. उन्होंने रण जी-शू और मुझे अंधेरी, घुप्प गुफा में अकेला छोड़ दिया.

अध्याय पाँच

"चिंता मत करो, युंग-लू," रण जी-शू ने प्रसन्नता से कहा. "अपने जीवन के बाकी हिस्से को बिताने के लिए इससे भी कहीं बदतर जगह हैं." फिर उसने अपनी जेब से एक मोमबत्ती निकाली और उसे जलाया.

मैंने गहनों की दीवारों और हाथी दांत के सिंहासन को देखा. अचानक वे इतने शानदार नहीं लग रहे थे.

"इसके अलावा," रण जी-शू ने कहा, "मुझे बाहर निकलने का एक गुप्त दरवाज़ा पता है."

"यह तो बहुत अच्छा है," मैंने कहा. "फिर चलो यहाँ से निकल चलते हैं!"

रण जी-शू ने अपना सिर हिलाकर मना किया. "नहीं," उसने कहा. "तुम्हारा मिट्टी का योद्धा अभी अधूरा है. मैं उसे छोड़ नहीं सकता हूँ."

कोई फर्क नहीं पड़ा कि मैंने कितनी आरज़ू-मिन्नत की, लेकिन जब तक मेरा योद्धा समाप्त नहीं हुआ, तब तक रण जी-शू ने गुफा छोड़ने से इनकार कर दिया. उतनी सुंदर मूर्ति मैंने पहले कभी नहीं देखी थी. मेरी मूर्ती अन्य सैनिकों के बीच एकदम राजसी लग रही थी.

मूर्ती बहुत बहादुर भी लग रही थी, मुझे से भी बहादुर.

मुझे उसे देखकर गर्व महसूस हुआ. लेकिन मैं शर्मिंदा भी थी. मैं इस तरह के सम्मान के लायक नहीं थी? मैंने जो कुछ किया उससे मैंने रण जी-शू और खुद को खतरे में डाला था.

अंत में, मूर्ती समाप्त हो गई. मैंने और रण जी-शू ने उसे आखिरी बार देखा और फिर हम गुप्त दरवाज़े की ओर गए. इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि सम्राट कितना बुरा था, क्योंकि मेरी मूर्ती हमेशा उसकी सेवा करेगी.

अचानक, एक दुर्घटना ने मकबरे की चुप्पी को तोड़ा. हमने मंद रोशनी में अपनी ओर किसी के क़दमों की आहट को सुना. कब्र में कोई और नहीं था! रण जी-शू ने जल्दी से मोमबत्ती बुझा दी.

मैंने दो छायादार आकृतियों को आगे झुकते हुए देखा. मैंने रण जी-शू के हाथ पकड़ा और फिर हम योद्धा मूर्तियों के एक समूह के पीछे छिप गए. मैंने सैनिकों की पंक्तियों के बीच उन आकृतियों को चलते हुए देखा. वे हरेक मूर्ती के पास रुके.

तब मुझे उनकी असलियत का एहसास हुआ. "चोर," मैं फुसफुसाई. "वे सम्राट की चोरी कर रहे हैं! हमें उन्हें रोकना होगा!"

आपको आश्चर्य होगा कि मैंने उन्हें रोकने के बारे में क्यों सोचा. शायद मुझे चुप रहना सीखना चाहिए था. मैं सम्राट को पारा लेने से खुद को नहीं रोक पाई, फिर भला मैं चोरों को चोरी करने से कैसे रोक पाती?

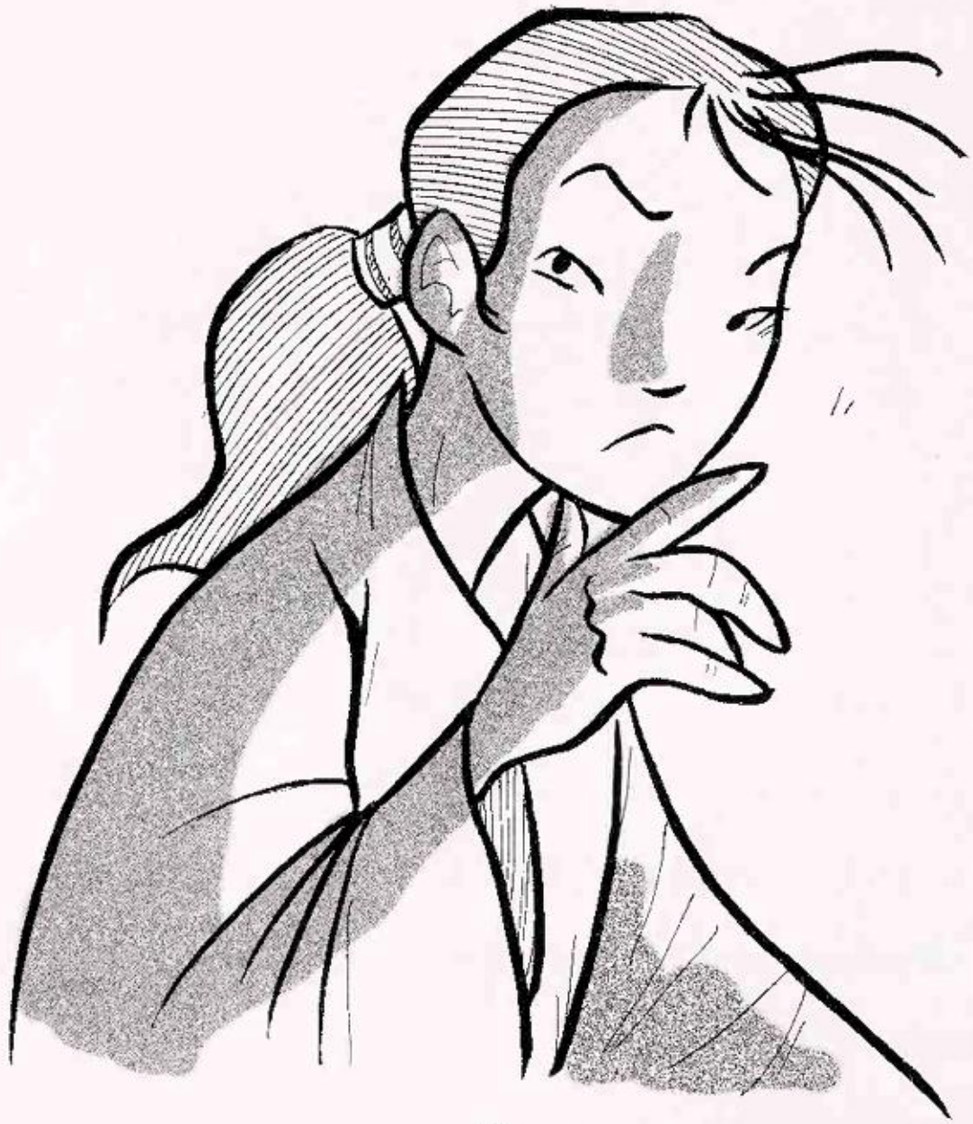

लेकिन मैंने इसमें से कुछ भी नहीं सोचा. मैंने मूर्ती के पीछे से छलांग लगाई. "रुको!" मैं चिल्लाई.

चोरों ने जब देखा तब वो हैरान रह गए. मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि चोर हथियार चुराने आए थे.

उन्होंने मुझ पर तलवार से वार किया. मैं पीछे की ओर गिरी, और एक मिट्टी के सैनिक से टकराई. सैनिक के हाथ का भाला मेरे पैरों से छुआ.

मैंने उस भाले को उठाया. वो भाला मुझे परिचित लगा. ऐसा लगा जैसे मैंने उसे कई बार देखा हो.

मैंने आँखें उठाकर सिपाही के चेहरे की ओर देखा. वो मेरे पिता की मूर्ति थी. पिता का वो भाला मैं हमेशा से अपने लिए चाहती थी, वो अब मेरे हाथों में था. मैंने भाला उठाया और उसे फेंका. वो हवा में उड़ा और उसने एक चोर के हाथ की तलवार को मार गिराया.

वो तलवार दूसरे चोर के पैर में जाकर लगी. वो दर्द से चीखने लगा. इससे बेहतर और क्या हो सकता था?

"दौड़ो!" रण जी-शू मुझ पर चिल्लाया.

फिर हम दोनों तेज़ी से गुप्त द्वार से निकलकर भागे. रण जी-शू गुफा को अपने हाथ के पिछले हिस्से की तरह जानता था. जल्द ही हम लोग दिन के उजाले में बाहर थे.

रण जी-शू ने गुप्त प्रवेश द्वार को एक पत्थर से बंद किया और चोरों को सदा के लिए गुफा में सील कर दिया.

"अब वे जो चाहें चुरा सकते हैं," उसने कहा. "लेकिन वे अंदर से बाहर नहीं निकाल पाएंगे."

अध्याय छह

मुझे एक काम करना बाकी था. "मैं सम्राट को खोजने जा रही हूँ," मैंने घोषणा की. "मुझे उन्हें पारा नहीं लेने के बारे में एक बार और बताना है."

"वह तुम्हें मार डालेगा," रण फी-शू ने चेतावनी दी, लेकिन उसने मेरा साथ नहीं छोड़ा. वो मेरे साथ-साथ महल की ओर चला.

रास्ते में, हमें महल से वापिस लौटने वाले लोगों का एक समूह मिला. कुछ दुःख से रो रहे थे. दूसरे खुश दिखे.

"क्या हुआ?" मैंने उनसे पूछा. "सम्राट मर गया है!" उन्होंने हमें बताया.

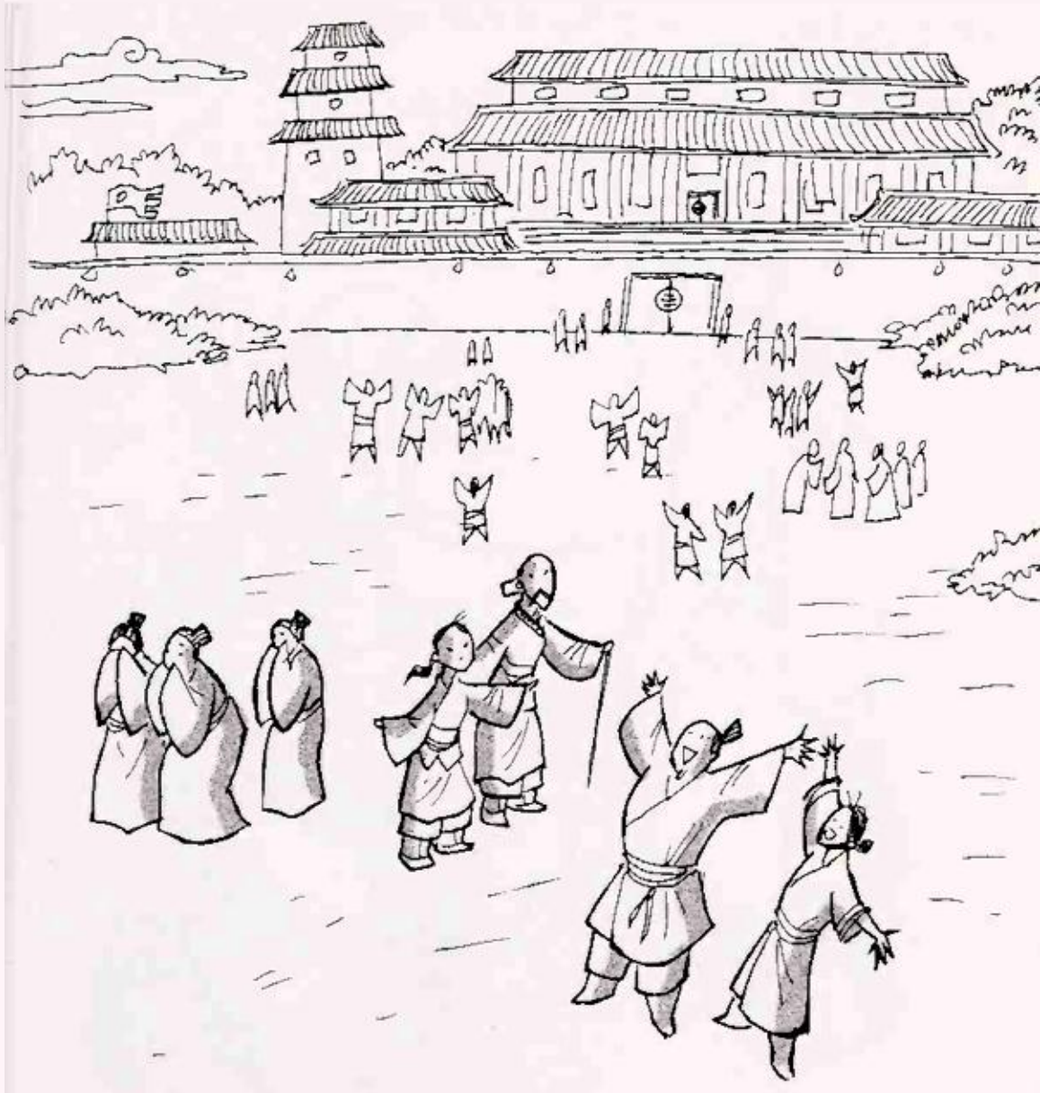

रण जी-शू और मैंने एक-दूसरे को देखा. "हमें बहुत देर हो चुकी है," रण जी-शू ने कहा. "चलो अब घर चलते हैं."

"मेरा कोई घर नहीं है," मैंने कहा.

उसने मुझे देखा और धीरे से कहा, "तुम एक बहादुर युवा योद्धा हैं. आओ, मेरे परिवार के साथ आकर रहो. मुझे इस पर गर्व होगा."

जब हम चले, तब मैंने रण जी-शू से अपने पिता की मूर्ती के बारे में पूछा.

उसने कहा, "मैंने उनकी मूर्ती को अपनी स्मृति से उकेरा था. मुझे अपने दिल में पता था कि वो मर गए होंगे. लेकिन तुम भी अपने पिता जितनी ही शूरवीर योद्धा हो."

"आपको मेरे पिता का भाला कैसे मिला?" मैंने पूछा.

रण जी-शू मुस्कराया. "मैं अपने सभी रहस्यों को तुम्हें नहीं बता सकता," उसने कहा.

जब हम रण जी-शू के घर की ओर चले तो मैं दुखी थी. मैं खुद को एक योद्धा की तरह महसूस नहीं कर रही थी. सम्राट मर चुका था. चोरों को रोकने की कोशिश में हम लगभग मरने की कगार पर थे.

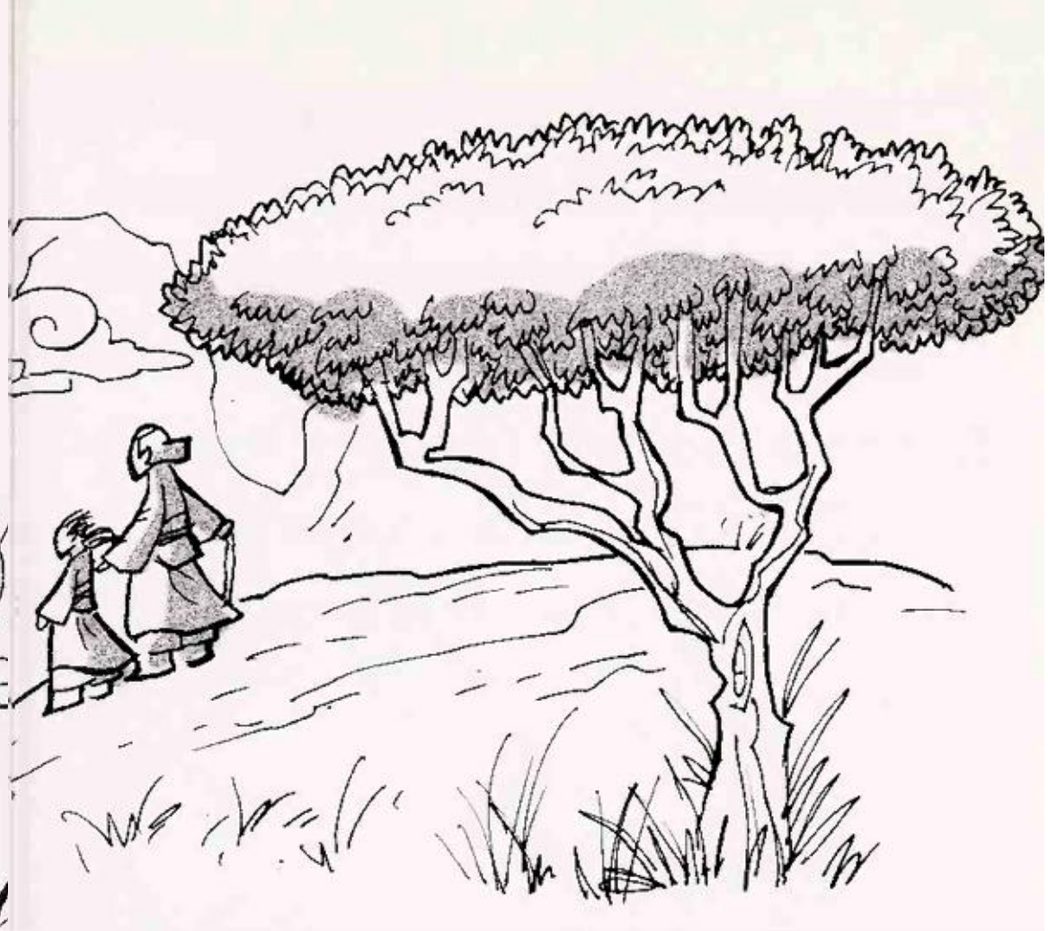

रण जी-शू ने मेरा मुरझाया हुआ चेहरा देखा. "तुमने सम्राट को बचाने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डाला," उन्होंने कहा. "तुमने कब्र की रक्षा के लिए भी अपनी जान जोखिम में डाली. एक योद्धा को बहादुर होने के लिए युद्ध लड़ने की जरूरत नहीं होती है."

मैंने कब्र में अपनी योद्धा मूर्ती के बारे में सोचा जो पिता की मूर्ती के साथ सम्राट की रखवाली कर रही थी. शायद वो मूर्ति के लिए सही जगह थी.

"इसके अलावा, अपनी बहादुरी साबित करने के लिए तुम्हारे पास अभी बहुत समय बाकी है," रण जी-शू ने कहा, "पर बच्चे का जीवन जीने के लिए तुम्हारे पास अब थोड़ा ही समय बचा है."

वो सही था. रण जी-शू के परिवार ने मेरा दिल से स्वागत किया. मेरे साथ खेलने के लिए अब मेरे नए भाई-बहन थे. मैं बहादुर होने के बारे में भूल गई थी. मैं योद्धा बनने की बात भी भूल गई थी.

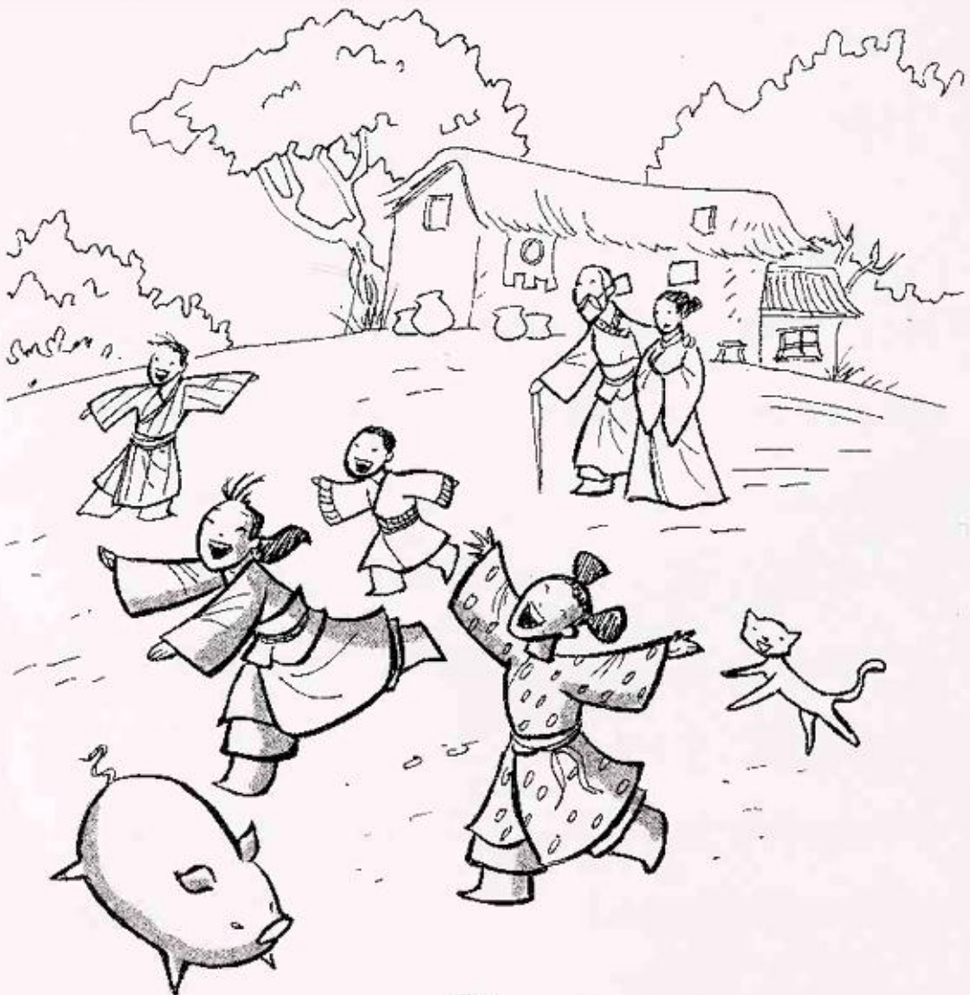

लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, यह बात मुझे याद रही, हमेशा याद रही कि मैं सम्राट की कब्र में अकेली लड़की योद्धा थी. मैं एक मिट्टी की योद्धा थी.

अंत के शब्द

चीन के प्रथम सम्राट किन शी हुआंग्डी एक शक्तिशाली व्यक्ति थे. वह किन राजवंश के नेता थे. 221 ईसा पूर्व में, उनके सैनिकों ने अपने दुश्मनों को हराया. किन शि हुआंग्डी ने अपने शासन में आसपास के राज्यों को एकजुट किया. उन्होंने चीनी साम्राज्य का गठन किया.

सम्राट किन ने अपने लोगों को बड़े-बड़े काम करने के लिए मजबूर किया. उन्होंने चीन की महान दीवार के निर्माण के लिए दास श्रम का इस्तेमाल किया. साम्राज्य पर आक्रमण करने वाले दुश्मनों को दूर रखने के लिए उन्होंने महान दीवार का निर्माण करवाया. महान दीवार का निर्माण करते समय कई लोगों ने अपनी जान गंवाई. दीवार इतनी लंबी थी, कि उसे खत्म होने में सदियों का समय लगा. आज, वो लगभग 4,000 मील (6,400 किमी) लंबी है. यह दुनिया की सबसे लंबी संरचना है.

सम्राट किन शी हुआंग्डी ने अपने लिए एक शानदार मकबरे के निर्माण भी करवाया. उसके लिए भी उन्होंने दास श्रम का इस्तेमाल किया. सम्राट किन का मानना था कि वो मृत्यु के बाद भी एक शक्तिशाली सम्राट बने रहेंगे. उनकी कब्र उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी. 38 वर्षों की अवधि में 700,000 से अधिक मजदूरों ने मिलकर मकबरे का निर्माण किया. वो कमरों और बड़े हॉल का एक जैसा चक्रव्यूह था. छत पर मोती और जवाहरात जड़े थे. वहां पारे की एक झील थी. अगले विश्व में सम्राट की सुरक्षा के लिए मिट्टी की सेना का निर्माण किया गया था.

सम्राट ने मिट्टी की सेना को के निर्माण के लिए कुशल कारीगरों को नियुक्त किया. हजारों सैनिकों, घोड़ों और रथों के साथ सेना पूरी हुई. सैनिकों को कतारों में खड़ा किया गया. प्रत्येक सैनिक के चेहरे को विभिन्न विशेषताओं के साथ गढ़ा गया था. उनके कपड़े और शरीर पेंट किए गए थे, और उनको असली हथियार दिए गए. इससे प्रत्येक सैनिक सजीव और जीवित दिखने लगा.

प्रत्येक सैनिक के चेहरे में अंतर यह दर्शाता था कि मूर्तियाँ वास्तविक लोगों पर आधारित थीं.

यद्यपि कब्रों के धन को गुप्त माना जाता था, सम्राट किन शी हुआंगडी की मृत्यु के पांच साल बाद कब्र पर छापा पड़ा. मिट्टी के योद्धाओं के हथियार चुराए गए, और छत पर जड़े रत्न चुराए गए. कब्र को लोग फिर लम्बे अर्से के लिए भूल गए. 1974 में दो किसानों ने मिट्टी की सेना के कुछ हिस्सों को खोदकर निकाला. आज भी कुछ टेराकोटा (मिट्टी के बने) सैनिक बरकरार हैं. उन्हें दुनिया के विभिन्न संग्रहालयों में देखा जा सकता है.

युंग-लू, चांगआन में एक योद्धा बनने के लिए कटिबद्ध है. लेकिन जब युवा लड़की वहां पहुंचती है, तो उसे पता चलता है कि सेना वो नहीं है जिसकी उसने कल्पना की थी. वह सम्राट को पारा लेते हुए भी देखती है. क्या युंग-लू एक योद्धा बन पाएगी? इससे भी महत्वपूर्ण बात, क्या वो सम्राट को पारे के ज़हर से बचा पाएगी?

किन राजवंश

समाप्त